

# राष्ट्र निर्माण की कड़ी में असहयोग आंदोलन

Dr. Sandhya Kumari,

Teacher, U.M.S. Vishunpur Sumer, Nayatola, Kanti

प्रस्तावना : --

हमारा राष्ट्र 'भारतवर्ष' एक समृद्ध एवं वैभवशाली राष्ट्र के रूप में सदैव अवस्थित रहा है, जहाँ सम्राट अशोक, चन्द्रगुप्त मौर्य, पृथ्वीराज चौहान जैसे महान शासकों ने समय-समय पर इसे शासित किया है किन्तु परिस्थिति विशेष के वशीभूत होकर हमारा राष्ट्र विदेशियों के अधीन हो गया। ऐसे में हमारे राष्ट्र के निर्माण से तात्पर्य था इसकी 'स्वाधीनता'।

भूमिका : -

किसी राष्ट्र के निर्माण से आशय है उसकी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि चतुर्दिक विकास है। जबकि हमारा राष्ट्र सदियों पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। ऐसे में गांधी जी का पदार्पण, १९१५ ई० में राष्ट्रीय आंदोलन में हुआ। इससे पहले भी राष्ट्र भक्तों के द्वारा विरोध की प्रक्रिया चल रही थी, किन्तु गांधी जी के आगमन ने इसे और भी प्रत्यक्ष रूप से अग्रसर किया। गांधी जी के नेतृत्व में संचालित आंदोलनों ने राष्ट्र निर्माण की कड़ी में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन आंदोलनों में १९१९ का 'असहयोग आंदोलन' भी एक है जिसने स्वतन्त्रता संग्राम में एक नयी जान फूक दी। इसमें देश के सभी वर्गों के लोगों ने बढ़ चढ़ के हिस्सा लिया था।

प्रथम विश्व युद्ध [१९१४-१९१८] के पश्चात, राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आंदोलन की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी भारतीय राजनीति में गांधी जी का प्रवेश। प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय सेना ने ब्रिटिश शासक के पक्ष में युद्ध किया था और इसके लिए गांधी जी ने उन्हें प्रेरित किया था। सरकार की ओर से गांधी जी को यह आसवासन दिया गया था कि युद्ध समाप्ति के पश्चात उन्हें स्वराज्य प्रदान करेगी। युद्ध में सहायता के लिए गांधी जी को कैसरे हिंद की उपाधि से विभूषित किया गया। सरकार ने उनके कार्यों को रचनात्मक बताया लेकिन जल्द ही ब्रिटिश सरकार का असली रूप सामने आ गया और युद्ध समाप्ति के बाद सरकार द्वारा दमन की नीति अपनाई गयी। फलस्वरूप गांधी जी को जनआंदोलन का निर्णय लेना पड़ा।

कारण : --

महायुद्ध के परिणामस्वरूप देश में उत्पादन ठप्प पड़ गयी थी। चीजों की कीमतें आसमान छू रही थीं। भूखमारी और बेकारी से भारतीय जूझ रहे थे। ऊपर से अतिरिक्त 'कर' का बोझ उनके लिए असह्य हो रहा था जिससे जनता विक्षुब्ध हो रही थी। पीड़ित जनता ने सरकार के विरुद्ध गांधी जी को सहयोग देकर उन्हें इस आंदोलन के लिए प्रेरित किया अतएव गांधीजी ने गुजरात के अहमदाबाद में कपड़े के मिल मजदूरों एवं गरीब किसानों के लिए सत्याग्रह का बिगुल बजाया। सन् १९१९-२० में इसकी शुरुआत हुई थी जिसकी भूमिका १९१७ में ही 'मोंटेस्क्यू चेम्सफोर्ड' के द्वारा तैयार हो चुकी थी। प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति ने इसे पृष्ठभूमि प्रदान कर दी। ६ फरवरी १९१९ ई० को रोलेट एक्ट का प्रस्ताव आया और मार्च १९१९ में पारित हुआ। इस अधिनीयम के अनुसार किसी भी व्यक्ति को सरकार के खिलाफ षड्यंत्र करने के आरोप में गिरफ्तार किया जा सकता था। रोलेट एक्ट भारतियों के नज़र में काला कानून था।

दूसरी ओर महायुद्ध में तुर्की ने जर्मनी के पक्ष में ब्रिटेन और फ्रांस के खिलाफ लड़ाई में भाग लिया था जिस से विजय के उपरांत तुर्की को खंड-खंड कर दिया गया था। तुर्की के 'खलीफा' के अपमान से भारतीय मुसलमान भी क्षुब्ध हो गए थे, जिससे

वे खिलाफत आंदोलन शुरू कर दिये। 'डॉ० एम० ए० अंसारी' द्वारा दिल्ली के मुसलमान लीग अधिवेशन में मांग की गई कि खलीफा के पद और प्रतिष्ठा की रक्षा की जाए। यह अवसर गांधी जी के लिए बड़ा ही महत्वपूर्ण रहा। उन्होंने खिलाफत और अमृतसर अत्याचार के खिलाफ मुसलमान सहित समस्त भारतीयों का समर्थन प्राप्त कर आंदोलन चलाने का निर्णय किया।

सितंबर १९२० ई० में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन कलकत्ता में आयोजित किया गया, जहां गांधी जी द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर असहयोग आंदोलन चलाने का प्रस्ताव रखा गया। लेकिन कांग्रेस के उदारवादी आंदोलन के पक्ष में नहीं थे। यद्यपि काफी वाद-विवाद के बाद स्वीकृति मिल गयी। 'Tara Chand' ने 'History of the Freedom Movement in India' के Volume-3 में लिखा है कि "The change to the face of an empire which had just emerged victorious from a war was an act of magnificent changed Gandhi ji and large bond of devoted workers accept through the country, carrying also the banner inscribed with the message of non-cooperation."

दिसंबर १९२० ई० के नागपुर अधिवेशन में इस आंदोलन को पूर्ण स्वीकृति मिल गयी और गांधी जी के नेतृत्व में आन्दोलन कि शुरुआत हुई। उन्होंने इस आंदोलन में अहिंसा के सिद्धान्त पर विशेष बल दिया। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करते हुए स्वदेशी वस्तुओं पर बल दिया गया। जगह-जगह हड़ताल किया गया। भारी संख्या में छात्रों द्वारा सरकारी स्कूलों और कॉलेजों को छोड़ा गया और उसकी जगह नई संस्थाएं स्थापित हुईं।

दुकानों को बंद रखा जाने लगा। विदेशी शराब की दुकानों पर धरणा दी जाने लगी। रेलवे कर्मचारी एवं मजदूरों ने भी हड़तालें करनी शुरू कर दी। सूत काटने एवं करघा पर वस्त्र बुनने पर बात आई। घरेलू उद्योग द्वारा आजीविका का प्रबंध किया गया। सुभाष चन्द्र बोस ने अपने आई० सी० एस० की नौकरी छोड़ दी। टैगोर ने अपने सर की उपाधि एवं गांधी जी ने कैसरे हिन्द की उपाधि को वापस कर दी। भारी संख्या में वकीलों द्वारा वकालत छोड़ दी गयी। कचहरियों का विरोध किया गया। आंदोलन में मुसलमान नेताओं ने भी बड़ चढ़ कर भाग लिया था।

१९१९ ई० के अधिनीयम के तहत बनी व्यवस्थापिका सभाओं का बहिष्कार किया गया। नवम्बर १९२१ ई० में प्रिंस ऑफ वेल्स भारत आया जिसका हर जगह हड़तालों से स्वागत हुआ फरवरी १९२१ में ड्यूक ऑफ बर्किंगम भारत आया। इनका भी स्वागत काला झण्डा और हड़तालों से हुआ। स्थिति दिनों दिन गंभीर होती गयी। असम और बंगाल में रेलवे मजदूरों ने हड़ताल की तो मिदनापुर में कारबंदी द्वारा आंदोलन को बढ़ावा दिया जा रहा था। जेल में कैदियों की संख्या २०००० तक पहुँच गयी थी। यह आंदोलन देहात के गरीब मजदूरों किसानों से लेकर शहर के व्यापारियों तक फैली थी जिसे रोक पाना ब्रिटिश सरकार के लिए कठिन हो रहा था। यद्यपि आंदोलन को दबाने हेतु ब्रिटिश सरकार ने 'प्रेस एक्ट', 'सेडिसन एक्ट' का प्रयोग कर रहे थे।

जब आंदोलन अपनी चरम सीमा पर थी। भारत के सभी वर्गों द्वारा इसे पूरा पूरा सहयोग मिल रहा था। इसी बीच ६ फरवरी १९२२ ई० को चौरा चौरी में एक घटना घटी जिसका रुख हिंसात्मक हो गया था। भीड़ द्वारा प्रदर्शन किए जाने पर पुलिस ने गोलियां चला दी जिससे कई लोग मारे गए। और मजबूर होकर २४ मार्च १९२२ ई० को गांधी जी को आंदोलन वापस लेना पड़ा। यद्यपि उनके इस फैसले से भारतिए काफी दुखी हुए और उनके खिलाफ उग्र प्रतिक्रिया हुई। शुभाष चंद्र बोस ने कहा की नेता की बातों को मानना है परंतु इससे हमे काफी निराशा हुई है। वही नेहरू जी ने भी अपनी क्षुभता दर्शायी। उनका कहना था की इससे राष्ट्रीय आंदोलन को आगे बढ़ाने में बाधा उत्तपन्न होगी।

अंततः सरकार की दमनकारी नीति और गांधी जी के अहिंसात्मक विचारों ने प्रत्यक्षतः इस आंदोलन को स्तहगित कर दिया। वाइसरॉय रीडिंग ने बॉम्बे सरकार को आदेश दिया की गांधी जी को गिरफ्तार करे और १० मार्च १९२२ को उनकी गिरफ्तारी के साथ इस ईआंदोलन का अंत हो गया।

भारतीय स्वतंत्र संग्राम के इतिहास में १८५७ ई० के सिपाही विद्रोह के बाद यह एक युगांतकारी घटना थी। अपने असफलता के बावजूद इस आंदोलन ने भारतीय जनता में जो जागृति लायी उससे सरकार पर से जनता के विश्वास की नींव हिल गयी और अब भारतीय समझ गए थे की आजादी अपने बूते पर ही लिया जा सकता है। 'The non-cooperation movement had spread political ideas among the masses of the people.' इस प्रकार अपनी असफलता के बावजूद इस आंदोलन ने जो अपना प्रभाव स्वतंत्र आंदोलन पर डाला उसका प्रत्यक्ष प्रमाण 'सविनय अविज्ञा' आंदोलन तथा 'भारत छोड़ो' आंदोलन के रूप में दृष्टिगोचर हुआ। इसी नींव पर पाव रखकर हमारे स्वतन्त्रता सेनानियों ने आजादी के मंजिल को पायी और १५ अगस्त १९४७ की सुबह स्वतन्त्रता के किरणों के साथ अपनी अमिट छाप छोड़ी।

इस प्रकार यह कहना सर्वथा उचित होगा की गांधी जी द्वारा संचालित किया असहयोग आंदोलन राष्ट्रीय निर्माण की वह कड़ी साबित हुई जिसने आजादी के मंजिल तक पहुंचाने का रास्ता बनाया।

### संदर्भ - सूची :-

1. तारा चंद, 'हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया', वॉल्यूम III ;
2. सुरेन्द्र नाथ बनरजी, 'अ नेशन इन द मेकिंग : थौट्स ऑन इंडियन डिस्कॉन्टेन्ट्स', लंदन, १९२९ ;
3. एम० आर० बक्शी, 'साइमन कमिशन एंड इंडियन नेशनलिज्म', नई दिल्ली, १९७७ ;
4. एम० के० गाँधी, 'हिन्द स्वराज', नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद , १९४६ ;
5. रजनी पाम दत्त, 'आज का भारत', मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, दिल्ली, १९७५ ;
6. गिरिजा शंकर, 'भारत में लोकतान्त्रिक समाजवादी आंदोलन', विश्वभारती पब्लिकेशन्स ;
7. एम० के० गाँधी, 'नॉन-वायोलेंस इन वार एंड पीस', वॉल्यूम I एवं II , नवजीवन पब्लिकेशन्स, १९४२ , १९४९ ;
8. आर० सी० मजूमदार, 'गांधीज़ प्लेस इन द हिस्ट्री ऑफ इंडियन नेशनलिज्म', चौमासिक, विश्वभारती पब्लिकेशन्स, वॉल्यूम ३५ ;
9. जी० एन० पाण्डेय, 'मोबिलाइजेशन इन मास मूवमेंट : काँग्रेस प्रोपेगैन्डा इन यूनिटेड प्रोविन्स १९३०-३४', मॉडर्न एशियन स्टडीज़, वॉल्यूम ९, १९७५ ;
10. बर्नहार्ड मन्न, 'महात्मा गांधी और पाउलो फ़रेरी के शैक्षणिक अवधारणाएँ' ;
11. पीटर रूहे, 'गाँधी : एक छायाचित्र जीवन', आइ.एस.बी.एन. ०-७२४८-९२७६-३ ;
12. जीन शार्प, 'गाँधी एक राजनैतिक नीतिज्ञ के रूप में, अपने मूल्यों तथा राजनैतिक निबंधों के साथ', बोस्टन:होरीज़ोन बुक्स, १९७९ ;
13. गियान्नी सोफ्री, 'गाँधी और भारत केंद्र में एक सदी', १९९५। 2